सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2024 का पंचम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक वैशाख मास विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित **'वैज्ञानिक संस्कृत वाङ्मय'** नामक शोधलेख में आध्यात्मिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़ा गया है। तत्पश्चात् डा. विश्वावसु गौड एवं प्रो. वैद्य बनवारी लाल गौड़ द्वारा लिखित **'हिताभिर्जुहुयान्नित्यम्'** लेख में मनुष्य के शरीरस्थ धातुओं का क्षय होना व उसको रोकने के उपायों के बारे में बताया गया है। इसी क्रम में महन्त हरिशंकरदास 'वेदान्ती' द्वारा लिखित **'वैशाखमास-माहात्म्य'** लेख में वैशाख मास के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। तत्पश्चात् डॉ. श्रीमती अंजना शर्मा द्वारा संकलित **'भगवान् परशुराम के कुछ अर्चा-विग्रहों के दर्शन'** लेख में भगवान् परशुराम के जीवन तथा भारतवर्ष में उनके मन्दिरों के बारे में जानकारी दी है। साथ ही जयप्रकाश शर्मा द्वारा संकलित **'श्री नन्दकिशोर शर्मा नैयायिक'** नामक लेख में नन्दकिशोर शर्मा के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला है। तत्पश्चात् डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा संकलित **'गङ्गावतरण दिवस'** लेख में गंगा नदी के धरती पर अवतरण तथा गंगा नदी की महत्ता व पवित्रता का उल्लेख किया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा